अवान्तर
प्रो० मायानन्द मिश्र

अवान्तर

श्री मायानन्द मिश्र.

प्रकाशक :
मैथिली चेतना परिषद,
सहरसा

प्रथम संस्करण : १९८८ ई०

मूल्य :
साधारण : १०=००
सजिल्द : १५=०० 25/-

मुद्रक :
धर्मयुग प्रेस न्यू
कदमकुआँ, पटना-३

भूमिका

आधुनिक मैथिलीक इतिहास केर समकालीन काव्य कुंठित ओ व्यथित मानवीय-सम्वेदना तथा संघर्षशील युग-चेतनाक बौद्धिक एवं वर्गीय काव्य थिक, जे मिश्रित प्रतिक्रियाक बीच अपन यात्राक तीस बर्ष पूर्ण करैत प्राय: अंतिम साँस ल' रहल अछि।[1]

अंतिम साँस ल' रहल अछि एहि लेल जे ई काव्य-शिल्प अपन नवीन आकर्षण समाप्त क' स्वयं रूढ़ भ' गेल अछि तथा एकर आयु-सीमा सेहो समाप्त-प्राय अछि। मैथिली काव्य-जगतमे ई नवीन काव्य-स्वर 1958 ई० मे स्वरगंधाक रूपमे जन्म लेलक, 1960 ई० क 'अभिव्यन्जना'-प्रकाशन सँ एकटा काव्यान्दोलनक रूप मे ठाढ़ भेल तथा 1970 ई०मे किसुनजी द्वारा सम्पादित 'मैथिलीक नव कविता' सँ अवस्थित-व्यवस्थित भ' गेल। सन् 58 सँ सन् 88 ई०क मध्य एहि नवीन काव्यान्दोलनकेँ विकासक लेल अनेक पत्र-पत्रिका भेटल, अनेक हस्ताक्षरक उद्भव भेल तथा अनेक संकलनक उपलब्धि भेल।

दिशांतरक भूमिका मे—जे पुस्तकाकार तँ सन् 1965 ई० मे भेल, किन्तु जकर कविता प्राय: सन् 59/60 ई० मे लिखा गेल छल—जखन आलोचनाक सुविधाक लेल नवीन काव्यक नामकरणक प्रश्न समक्ष आयल छल तँ 'अभिव्यन्जना'-वादक रूपमे तकर निराकरण कयने छलहुँ—एहि लेल जे एहि प्रकारक काव्यक अभिव्यन्जना-प्रणाली सर्वथा नवीने नञि, आकस्मिको छल, आकर्षको छल। सङहि 'अभिव्यन्जना' नामक पत्रिका सर्वप्रथम एहि प्रकारक काव्य केँ एकटा आन्दोलनक रूपमे ठाढ़ करबाक चेष्टा कयने छल।

तकर बाद अनेक नाम (वाद) केर प्रस्ताव आयल जाहि मे अधिकांश (प्रयोगवादे जकाँ) खड़ी-बोलीक हास्यास्पद अनुकरणमूलक छल तथा किछु तर्कहीन। पूर्वँ कहल, नामकरणक प्रयोजन समीक्षक लेल होइछ, पाठक लेल नञि, स्वयं कवि लेल सेहो नञि। उपयुक्त नामकरण एखनहुँ कयल जा सकैछ जे अनुकरणमूलक नञि हो, तर्कसंगत हो तथा काव्य-प्रकृतिकेँ

---

1. एकर विस्तृत विवेचन हम 'आधुनिक मैथिली-काव्यक भूमिका' नामक कृतिमे कयल अछि।

अधिकाधिक रेखांकित कर'बला हो। आ तेँ एहि प्रकारक काव्यकेँ तत्काल हम अभिव्यञ्जनावादी काव्य सेह कहब।

अभिव्यञ्जनावादी काव्य अपन उपलब्धि मे बहुत अधिक निराश नञि अछि। ई बात हम नवीन काव्यक नाम पर जे किछु अनर्गल प्रलाप लीखल गेल अछि अथवा काव्यक नाम पर जे भ्रष्ट गद्य लीखल गेल अछि तकरा ध्यानमे रखैत लीखि रहल छी। जखन कोनो बाढ़ि अबैत अछि तँ बहुत रास अवांछितो प्रवाहित होइते अछि, से स्वाभाविके अछि। ओकर कटु आलोचनो स्वाभाविके।

कटु आलोचना अधिक भेल प्रेषणीयताक प्रश्न पर। प्रेषणीयताक अभाव भेल किछु अपरिचित भाव-बोधक कारणे तथा किछु-किछु अप्रचलित प्रतीक ओ बिम्ब-योजनाक कारणे सेहो। किछु समर्थो कवि प्रेषणीयताक प्रश्न पर उदासीन रहलाह अछि।

किन्तु एहि तीस वर्षमे अभिव्यञ्जनावादी काव्य निश्चित रूपेँ एकटा नवीन क्षितिजक उद्घाटन केलक अछि, ओहि क्षितिजकेँ अपन युग-चेतनाक भाव-रंगसँ रेखांकित केलक अछि, रेखांकनक लेल सर्वथा नवीन शिल्प-बोध तकलक अछि तथा एकटा निश्चित अभिव्यञ्जना-प्रणालीक विकास केलक अछि। वस्तुत: अभिव्यञ्जन-शैली एहि काव्यान्दोलनक अन्यतम उपलब्धि थिक। युग-चेतनाक अभिव्यक्ति तँ न्यूनाधिक सब युगक सब साहित्य मे होइतहि अछि। एकरा बिना तँ साहित्य, साहित्ये नञि भ' सकैछ।

एतबा निर्विवाद जे श्रेष्ठ साहित्य शाश्वत-मूल्य-बोध ओ समकालीन युग-बोधक संतुलित समन्वयन थिक। समकालीन युग-बोध साहित्यक शरीर थिक आ शाश्वत मूल्य-बोध ओकर आत्मा। विकासशील शरीरकेँ आत्मे गरिमा प्रदान करैत रहैत अछि। शरीरक प्राप्ति होइछ वर्तमान सँ तथा आत्माक अतीत सँ, परम्परा सँ। शरीर नवीन सौन्दर्यक आकर्षण दैत अछि तथा आत्मा दैत अछि चिरंतनता। एहने साहित्य श्रेष्ठ साहित्य बनैत अछि। कालजयी होइत अछि।

कहबाक प्रयोजन नञि जे अभिव्यञ्जनावादी काव्यक जन्म आङनक सोइरीगृहमे नञि, अपितु हॉस्पिटलक बरंडा पर भेल छल। आ तेँ ई काव्य भाव-बोध मे, शिल्प-विन्यास मे तथा कथन-भंगिमा मे अपन परम्परा सँ कटैत चल गेल, मैथिल-मन सँ हटैत चल गेल। पाछू तँ काव्य रचना 'खेल' भ' गेल।

आ काव्य अपन धर्म सँ च्युत भ' गेल। निश्चित रूपेँ काव्य एकटा विधा थिक जकर अपन शासन अछि, अपन अनुशासन अछि। ई तथ्य उपेक्षित होम' लागल।

एकर खेद आचार्य रमानाथ बाबूकेँ सेहो भेल छलनि—'खेदक विषय थिक जे आधुनिकताक तरंगमे कतोक कवि (?) एहि दिशि ध्यान नहि दए तेहन कविता (?) लिखैत छथि जकरा मुक्तवृत्त सेहो नहि कहि सकैत छी, ओ 'वृत्त' थिके नहि।···· श्री उमानाथ बाबूक उक्ति सर्वथा समीचीन जँचैत अछि जे कविता तँ ओ थिके नहि; ओकरा नीक गद्यो नहि कहि सकैत छी'—(नवीन गीतक भूमिका पृ० 16)।

एहि प्रकारेँ कालांतरक अभिव्यञ्जनावादी काव्य अपन युग-चेतनाक अभिव्यक्ति सँ भाव-बोध तथा नवीन प्रयोग सँ शिल्प-बोधक क्षेत्रमे सामान्यत: उपलब्धि त' प्राप्त क' सकल, किन्तु काव्य-धर्म सँ निरंतर च्युत होइत चलि गेल आ' अंत मे रूढ़ भ' गेल। ई एक प्रकारक गतिरोध थिक।

गतिरोध हँटि सकैत अछि काव्यमे पुन: राग-तत्व ओ लय-तत्वक पुनर्स्थापन एवं पुनर्प्रतिष्ठापन सँ। तखने साम्प्रतिक मैथिली-काव्य अपन नवीन स्वरूप-स्पन्दन सँ प्राणवन्त भ' पुन: समाज मे प्रवेश क' सकत। प्रवेशक लेल काव्यकेँ पुन: स्व-काव्य-धर्म ओ स्व-काव्य-रूप ग्रहण कर' पड़त। काव्यक धर्म थिक राग-तत्व आ रूप थिक लय-तत्व। स्मरणीय जे काव्य एहि दुनू—राग तत्व ओ लय-तत्व—क अभावमे ने कोनो प्रभावे उत्पन्न क' सकैछ आ ने स्वभाव सँ जीविते रहि सकैछ। काव्य कालजयी बनैत अछि अपन शाश्वत मूल्य-बोध तथा समकालीन युग-बोधसँ। शाश्वतता भेटैत अछि परम्परा सँ आ युग-चेतना भेटैत अछि समकालीन समाज सँ।

आजुक विश्व-मन संत्रस्त अछि; ओकरा चाही शांति ओ सह-अस्तित्वक धारणा। भारत-मन क्षुब्ध अछि। ओकरा चाही भावनात्मक एकता ओ राष्ट्रीय अखंडता। मैथिल-मन कुंठित अछि; ओकरा चाही अपन अस्तित्व ओ सांस्कृतिक परिचय-स्मृति। ई देत इतिहास। इतिहास स्वयं चौबटिया पर ठाढ़ किंकर्तव्यविमूढ़ अछि। भौतिकता मे व्यस्त अछि आ विज्ञान सँ त्रस्त अछि। युग-दौड़ सँ कुंठित अछि।

इतिहासकेँ गढ़ैत अछि संस्कृति। संस्कृतिक महत्वपूर्ण उपकरण थिक काव्य। काव्यक महत्वपूर्ण धर्म थिक 'राग', धर्म थिक 'लय', अंतोगत्वो रूप।

आ तँ ई 'अवान्तर' ।

अवान्तरक आरम्भ अछि गीतल सँ ।

'गीतं लातीति गीतलम्' अर्थात् गीत केँ आन'बला भेल गीतल । किन्तु 'गीतल' परम्परागत गीत नञि थिक, एहिमे एकटा 'सुर' गजल केर सेहो लगैत अछि । 'गीतल' गजल केर सब बंधन (सर्त) केँ स्वीकार नञि करैत अछि । कइयो नञि सकैत अछि । भाषाक अपन-अपन विशेष्ता होइत अछि जे ओकर संस्कृतिक अनुरूपे निर्मित होइत अछि । हमर उद्देश्य अछि मिश्रण सँ एकटा नवीन प्रयोग । तैं गीतल ने गीते थिक, ने गजले थिक; गीतो थिक आ गजलो थिक । किन्तु गीतितत्वक प्रधानता अभीष्ट, तैं गीतल ।

गजल उर्दूक अपन 'राहड़ि-आमिल', शेर सभक अलग-अलग 'मिजाज', मुदा एक्के 'दस्तरखान' पर अनेक 'जख्मी', अनेक 'कातिल', अनेक 'खंजर' केर जमघट । एहि जमघट सँ फैज अहमद फैज अलग हटि गेलाह । एकटा नवीन घाट-बाटकेँ एकटा नवीन 'मुकाम' देलनि, नवीन 'मंजिल' तकलनि । गजल झरोखाक बुर्का छोड़ि, सड़क पर आबि गेल, सड़क केर उदास आँखि देख' लागल । गलीक आक्रोश ओकरा सम्वेदनशील बना देलक ।

एहनें सम्वेदनशीलता अवान्तरक किछु गीतल मे भेटत । 'अवान्तर'क गीतल, सभा-समारोहक सान्ध्य-मौजक अनुकूल भने नञि हो, किन्तु समकालीन युग-चेतनाक प्रति विमुख नञि अछि ।

किछु मे उच्चारण-असंतुलनो, जे वाध्यता ।

कहियो 'दिशान्तर'क परिशिष्ट मे गीत देने छलहुँ, आइ 'अवान्तर'क परिशिष्ट मे कविता । ई एहि लेल जे दिशान्तर-काल मे धारणा छल जे हम दोसर कविता-संग्रह नञि प्रकाशित करब ।

'अवान्तर' अपनेक शुभकामना चाहैत अछि ।

—मायानन्द मिश्र

गीतल

एक

नगर मे घोल भेलै, काल्हि ओ बयान देतै
कहैछ लोक सब, बताह छै, चलान हेतै ।

कतेक छोट देह मे कतेक आँखि भेलै
कहैछ गाछ तरक लोक कें मकान देतै ।

कतेक हाथ ओकर हाथ लेल उठइत छै
नगर के बौक सभक हाथ मे कृपाण देतै ।

बिहाड़ि संग मे चलैत छै ओकर सदिखन
देबाल तोड़ि देबा लेल ओ परान देतै ।

जकर चरण अकाश मे उड़ैत छै सदिखन
उड़ैक भेद सभक खोलि कें प्रमाण देतै ।

डुबल छलै अन्हार मे जते, जते सहमल
सभक अकाश हेतै सऽब लेल चान हेतै ।

दुइ

उठल बसात, उठत आर, जोर सँ बहतै
बढ़ल ई हाथ, बढ़त आर, आ कते बढ़तै।
उठल जे हाथ, एखन से बन्हा रहल मुट्ठी
देबाल बीच मे जे छैक से तुरत खसतै।

किताब बन्द अछि इजोत केर, अन्हारे मे
हिसाब आब हेतै, से हिसाब सँ चलतै।
उदास साँझ के भाषा कतेक बदलल छै
उगत जे आब भोर, सैह दिन अपन गढ़तै।

कतेक जीबि गेल, जीबि गेल धोखा सँ
भुगोल आब ने इतिहास केँ कतहु ठकतै।
कतेक अंत, अंत मे अबैछ, नियमे छै
कतेक अंत एखन, बीच केर, कते डरतै।

●

तीन

कतेक ठोर मे कतेक बात अटकल अछि
नगर भरिक बसात आब बहुत बदलल अछि।
बसात जे छलैक से बिहाड़ि बनि गेलै
गड़ल जतेक छलै, से ततेक उखड़ल अछि।

इ हाथ छीनि लेत ओ हँसी जे छल छीनल
गलीक बात सँ सड़क कतेक सहमल अछि।
बनल मचान कते ऊँच, कते डीह कटल
उकर अकाश छिनल गेल, सैह भड़कल अछि।

जे जीबि गेल, जीबि गेल जीवनक हाथेँ
कनेक गीत लेल बाट-घाट भटकल अछि।
घबाह पैर सभक छै, घबाह मोनो छै
सुतल भूगोल छलै, आब एखन धधकल अछि।

●

चारि

कहब ने फूसि एखन बात, बात भड़कल अछि
बिहाड़ि उठि गेलैक, रुखि कतेक बदलल अछि।
बिहाड़ि छीनि लेत जे एकर छलै हिस्सा
गलीक आँखि एक भेल, आँखि धधकल अछि।
उगत, जतेक आइ धरि एतय रहल डूबल
पहाड़ केर एखन साँस जेना अटकल अछि।
चलत जुलूस आब नञि अन्हार केर कहियो
इजोत देखि कें, अन्हार आइ सहमल अछि।
कतेक अरिपनक पिठार धरि रहल भूखल
कतेक मेहदीक रंग, मूक भटकल अछि।
चलैत बाट सँ छिनल ने गेल बाट कतहु,
जुलूस आगि के थिक, आगि एखन दहकल अछि।

पाँच

कतेक राति सँ, कतेक मन उपासल अछि
कतेक चार, कते गाम केर उछाहल अछि।
बिसरि गेलै हँसी करब दलान, आङन सँ,
कते सबेर सँ खरिहान जे उसारल अछि।
उकनि गेलैक मेहदीक गीत आङन सँ
जे गीत जाँत के छल, जाँत मे पिसायल अछि।
दिनुक दलान पर नियार छल जे साँझ रङब
झड़ल पुआर जकाँ साँझ सब उदासल अछि।
पियास सँ भरल कतेक अरिपनक आङन
कतेक राति के आँचर कते सिहायल अछि।
हँसीक दोग मे नोरक कते खजाना अछि
एतेक पानि अछि मुदा कते पियासल अछि।

छः

सुनैत छी, कपार ऐ नगर के दकचल अछि
बहैत अछि बसात, से बसात उनटल अछि ।
बिचार छल जतेक ठोर अछि हँसी रोपब
हमर इ हाथ पाँच बर्ष लेल कपचल अछि ।
जतेक आँखि भेटल, आँखि मे अन्हारे छल
नगर भरिक इजोत एकठाम अटकल अछि ।
सड़क पकड़ि सकैछ पैर जँ एतय कहियो
बना सकैछ बाट, बाट एखन भटकल अछि ।
बहैत अछि बसात, किन्तु बन्द अछि खिड़की
अकाश ऐ नगर के आनठाम लसकल अछि ।
फराक कंठ अछि, फराक सभक अछि माथो
सिखा सकैछ बात, बात जते बहसल अछि ।

सात

सुनैत छी, नगर अहाँक बहुत सनकल अछि
कते बबूर मे, कतेक ऊँट लटकल अछि ।

सुनल नगर मे जंगलो बनैछ लोके केर
हँसीक रंग धरि सियाह सुनल, खटकल अछि ।

सुनैत छी इजोत देखि, लोक डरि जाइछ
अन्हार केर जुलूस मे कतेक चमकल अछि ।

दिने देखार सड़क छीनि लैत अछि हँसियो
सड़क के आँखि-कान, मोन जकाँ पचकल अछि ।

पुछैक अछि कतेक बात, पुछी ककरा सँ
नगर के बोल सब कहैछ, बहुत बहसल अछि ।

कतेक बात बात मे, कतेक कहलक अछि
गलीक मूँह पर एखन कतेक ठमकल अछि ।

आठ

सुनल, अहाँक गाम केर लोक हँसइत अछि
कतेक नीक बात थीक, लोक बजइत अछि।

हँसी भेटैत छै कहाँ, बजार अछि चढ़हल
हँसैत अछि केहन मुदा कतेक ठकइत अछि।

कतेक टूटि गेलै घर, कते उजड़ि रहलै
खबरि तँ रोज रोज लोक कते पढ़इत अछि।

हबकि रहल इजोत कें अन्हार अनचोखे
ई मील-पाथरो तकैत जेना कँपइत अछि।

ठकैत अछि जिबैत लोक एतय जीवनकें
दिनहि मे कैक बेर लोक एतय मरइत अछि।

सुखैल धार जकाँ पानि आँखि मे सूतल
उदास साँस सँ रातुक पहाड़ नपइत अछि।

●

नऽ

चलैत काल बेर-बेर आँखि फड़कल अछि
गलीक मूँह पर पहुँचि करेज धड़कल अछि।

कतेक राति के मन मे, कतेक राति बसल
कतेक राति मे ई राति कते छलकल अछि।

अहाँ केर एक बोल मोन केर गीत बनल
कतेक गीत मे अहाँक राग गमकल अछि।

अहाँक नाम पर कतेक गाम अछि बसइत
अहाँक नाम लैत लैत लोक सनकल अछि।

सुधिक सुगंधि सँ कतेक अपन साँझ रङ्गत
कतेक मोड़ पर कतेक मुँह चमकल अछि।

अभाव मे कतेक भाव केर, भाव बढ़य
जतेक देखि लेलक से ततेक भटकल अछि।

●

दस

शराब केर आब काज नञि एखन पड़तैं
चलैत बात जते काल धरि अहंक रहतैं।

करेज राति केर, अकानि कें धड़कि रहलै
कतेक बात अछि जे बात-बात मे उठतैं।

कतेक आँखि मे अहाँक राज चलइत अछि
कतेक साँझ अहँक नाम पर एतय जमतैं।

एखन तँ राति अछि आ राति केर बातो अछि
कतेक राति धरि, कतेक राति केर चलतैं।

कतेक मूँह देखक लेल जेना बनइत अछि
जे चालि गाम के अछि, बात सब कते उड़तैं।

कतेक मोन मे, कतेक मोन रहइत अछि
उतरि जेतैक साँझ कोन गलो, के कहतैं ?

एगारह

कतेक बात एहन अछि, कहल ने जाइत अछि
कतेक राति कें ई राति बड़ दुखाइत अछि।

सुखैल धार जकाँ मोन मे पियास रहत
कते पियास ठोर पर जेना सिहाइत अछि।

कतेक हारि गेल अछि तकैत जीवन कें
कतेक जीवने सँ जीवनक सिकाइत अछि।

कतेक राति कें तकत राति, राति बितल
ओसार राति के असगर जेना डेराइत अछि।

बहैत अछि बसात ठूँठ जेना कबदाबय
कतेक मूँह अपन मूँह सन बुझाइत अछि।

जे बाट बीति गेल, बीति गेल बात कते
कतेक बात अंत सँ जेना पड़ाइत अछि।

बारह

तकैत मूँह कते, बेर-बेर अटकल अछि
पढ़ैत आँखि के भाषा, कतेक भटकल अछि।

बहुत के मोन मे छलैक, कोनो बात हेतै
केबार बन्द देखि कें कतेक खटकल अछि।

गली दने अन्हार मे चलब जे नञि सिखलक
ओकर इजोत एखन गाम-गाम भड़कल अछि।

पियास सँ भरल कतेक धार अछि बहलै
अकाश ठाढ़ भेल आब, आब ठनकल अछि।

उगैत काँट कें उठैत पैर नञि तकइछ
जरैत आगि के धधरा कतेक धधकल अछि।

कतेक जीबि गेल जीवनेक आशा मे
दिनक हिसाब भेल अछि, हिसाब फड़कल अछि।

तेरह

अहींक नाम मनक गाम लिखि पठाबै छी
जे जोड़ि गेल रही, जोड़ सँ घटाबै छी।

उठैत अछि कतेक पल, खसैत पल देखय
खसल जतेक भेटय, पाँज मे उठाबै छी।

कतेक साँझ के मन मे कतेक राति रहत
कतेक राति लेल साँझ कें लुटाबै छी।

कतेक पैच चोट, छोट बनल रहि जाइछ
कतेक छोट बनल पैच, से सठाबै छी।

देखल बहुत, बहुत सुनल, बहुत कमे दिन मे
कतेक बात कहब अछि, एखन लजाबै छी।

जे आगि थिक, रहत ओ, आगि जरइत अछि
जरैत अछि जते, करेज सँ सटाबै छी।

—

चौदह

बहुत कहैत अछि, गलीक ओ जमाना छल
जतेक आँखि छलै, आँखि लय खजाना छल।

बहुत कें मोन छै, चहल-पहल दोकान सभक
गलीक गीत छलै, गीत मे तराना छल।

खुजल रहै छलै जतेक जे झरोखा सब
देखꣳक लेल देखꣳबाक ओ बहाना छल।

कतेक मोन सँ जीबैत छलै जीवन भरि
हँसी लुटैत छलै नञि तकर ठेकाना छल।

तकैत छल कतेक लोक, लोक छल तकइत
देखꣳक लेल नगर भरि जेना दिवाना छल।

पढ़ैत छल जे लोक आँखि आँखि केर भाषा
जतेक ठोर छलै, ठोर सभक गाना छल।

●

पन्द्रह

अन्हेर बात थीक, गीत एखन गाबै छी
नजरि पड़ैछ जेम्हर, आँखि चढ़ल पाबै छी।

जतेक मोड़ छल गलीक से अन्हारे छल
टुटैत साँझ सँ भोरक कथा बनाबै छी।

जिबैत देखि जीवनो हँसैछ जीवन पर
घटाव केर हिसाब मे एखन जोड़ाबै छी।

बहुत भेटैत अछि, बहुत-बहुत उताहुल सन
पजरि जे आगि रहल से कने जगाबै छी।

बसल कतेक गाम गीत केर उजड़ि गेलै
हँसीक दोग महक नोर कें बचाबै छी।

कतेक आँखि सँ सपना टुटैत खसि पड़लै
खसल जकर जतेक पल, तकर उठाबै छी।

●

सोलह

जे बात भेल छलै, बात एखन उनटल अछि
नजरि देखि गाम केर; कतेक खटकल अछि।

कतेक बाट-घाट मे रहैत अछि ठीके
केहन भेलैक बात, गाम आबि भटकल अछि।
देखैत छी जतेक बेर बन्द अछि खिड़की
भरोस कैर ठाढ़ि मे कतेक लटकल अछि।
सड़क तँ वैह अछि आ लोको अछि ओहिना
जतेक जे देखैत अछि, ततेक सहमल अछि।

कहक तँ बात बहुत अछि, मुदा कही ककरा
कतेक बन्द द्वार देखि-देखि अटकल अछि।

एतय जे जीवि रहल जीवनक बहाना थिक
कते नजरि मे कतेक प्रश्न चमकल अछि।

सत्रह

अहँ केर एक हँसी, सै हँसी फँसाबै अछि
अबैत साँझ देखि केँ, कते डराबै अछि।

अहाँ ओझरैल सनक साँझ देखि, सोझराबी
कते सोझरैल सनक मोनकेँ ओझराबै अछि।

खसैत पल कतेक मे बिहाड़ि उठबै छै
पलहि मे एक युगक प्यास केँ जगाबै अछि।
किदन सुनैत छी, केदन कहैत छल ककरो
ई रंग थीक जे दसलोक मे घिनाबै अछि।
तकैत छल पियास मोन सँ, पियासल केँ
कतेक राति केँ ऐ राति सँ ठकाबै अछि।
नजरि पड़ल जकर तकर करेज अछि धड़कल
अहाँक आँखि सँ कतेक मुँह रङाबै अछि।

अठारह

जखन सँ नाम सुनल अछि करेज धड़कल अछि
केबार बन्द छल मुदा कतेक हुलकल अछि।

बहल बसात अहँक नाम पर एतय कतबा
कतेक मूँह अहँक नाम लैत गमकल अछि।

बसात छल बहैत से बसात गुमसुम छल
कतेक ठोर पर, कते पियास अटकल अछि।

बिसरि जेबाक बात अछि अहाँक जग जाहिर
गलीक मूँह पर एखन कतेक ठमकल अछि।

सड़क तँ वैह छल, बजार छल, दोकानो छल
समान देखि देखि कें कतेक खटकल अछि।

कतेक मोन मे, कतेक मोन गड़ि जाइछ
कतेक मोन नेने गाम-गाम भटकल अछि।

•

उन्नैस

बिसरि जे गेल, तकर मूँह मोन पाड़ै छी
दिनुक इजोत मे रातुक खड़ी उचारै छी।

कतेक यौवनक अपन रङल कथा होइछ
एतेक लोक मे, गीतक कथा उसारै छी।

हँसी भेटैत अछि कहाँ, हँसी कते मुसकिल
हँसीक रंग सँ अपन दरद ससारै छी।

कतेक नाम' कते ठोर लेल गीते थिक
कतेक गीत के दुनिञा एखन पसारै छी।

बिसरि सकैत छी, ऐ बात कें बिसरि जायब
कतेक भोरकें ऐ राति धरि नमारै छी।

चिन्हार पात सब बिहाड़ि संग उड़िआयल
दिनुक जे ठूँठ बचल, ठूँठकें निहारै छी।

•

बीस

कतेक आँखि, कते आँखि से ठकाइत अछि
गड़ल कनेक, मुदा से कते दुखाइत अछि।

बहुत के मोन मे बहुत-बहुत जे बात छलै
बहुत के आँखिमे एखन बहुत सिकाइत अछि।

हँसी देखैक लेल लोकके हँसऽ पड़इछ
कहैक लेल कते बात कहल जाइत अछि।

चिन्हार मूँह एखन अनचिन्हार भेल कते
अबैत देखि कते बाट सँ पड़ाइत अछि।

ओसार राति के ओहिना पड़ल रहत खाली
कतेक ठोर कते नाम पर सिहाइत अछि।

तकैत जीवनो रहल कतेक, जीवन भरि
जतेक शेष से विशेष बनि घिनाइत अछि।

एक्कैस

कोना ओ बात कही, बात सँ लजायल छी
जे संग-संग रहय, संग सँ ठकायल छी।

ठकैत जीवनो रहल कतेक जीवन कें
हँसीक दोग महक नोर सन नुकायल छी।

देख क बाद, नञि देखैक बड़ बहाना अछि
चलैत भीड़ मे एसगर जना हेरायल छी।

नगर लगैछ जेना अनचिन्हार जंगल हो
कतेक हाथ बिना मूँह सँ अघायल छी।

दिनुक देबाल पर कते हकार हम साटल
ढहल दलान के ऐ साँझ सन मिझायल छी।

गिलास जेह छुबी, सेह भेटै अछि फूटल
बहूर सँ कतेक बाट मे घेरायल छी।

बाइस

सुनब ने बात कोनो आब, सब बहाना अछि
अहाँ लग, लोक कहय, बात के खजाना अछि।

बहैत अछि तेहन बसात, गर्म सबहक मन
रूसल जतेक मूँह, फेर सँ मनाना अछि।

अहँक हँसीक रंग सँ रङैछ सब, दिनकें
जतेक दरबाजा से आङनक दिवाना अछि।

कतेक बेर सँ ठकैत अहाँ आयल छी
बिलटि गेलैक बात पर कते धराना अछि।

सुना सकैत छी कतेक बात मूँहें पर
एखन तँ बात मुदा एकटा सुनाना अछि।

जतेक छोड़ि देने छी अहाँ अन्हार एतय
हरेक मूँह लेल हाथ कें बनाना अछि।

तेइस

जुलुम केहन भेलैक से एखन सुनाबै छी
कतेक भेद सँ परदा एखन उठाबं छी।

कने बिहुँसि देलनि, नेहाल भेलहुँ गद्गद् सन
एखन तँ चोटकें करेज पर निजाबं छी।

झलक देखैक लेल बेर-बेर दौड़ल छी
देखैक बाद नजरि लोक सँ नुकाबै छी।

कते जी जान सँ, जो जान बचा रखने छल
दिने देखार लुटल अछि, कथा बुझाबै छी।

उड़ैत छल जतेक नाम के जते डंका
असल कही जँ कतहु तँ कहब उड़ाबै छी।

छुबैत छी जत' जते तते दरद करइछ
हँसीक रंग देखि कें कते डराबै छी।

चौबीस

सुनू ओ बात कने कालिहखन कमाल भेलै
दिने देखार सड़क बीच केहन हाल भेलै।

जे बात भेल छलै से कियो कोना बिसरत
उनटि गेलै बसात सँह तखन काल भेलै।

जतेक हाथ हुनक हाथ मे देलक कहियो
ओतेक हाथ तखन पाबि गाल लाल भेलै।

सभक नजरि देखि कें तुरत नजरि झुकलै
तखन तँ भीड़ केर मन जेना नेहाल भेलै।

सभक तँ मोन कखन सँ छलैक सनकल सन
बिहुँसि जे फेर देलनि, फेर इन्द्रजाल भेलै।

बिकैत अछि कतेक दिन, कतेक राति एतय
पड़ैक लेल कते नऽब हाल चाल भेलै।

पच्चीस

सुनैत छी, कहैछ सब, केहन जमाना अछि
जिबैत अछि जतेक जीवनक बहाना अछि।

पुछैछ हाल सब, बेहाल केर इच्छा सँ
बेहाल केर जे हाल, नहि तकर ठेकाना अछि।

हँसी बिकैत अछि, हँसी मुदा महग कतबा
हँसैत पर, हँसैत अछि, एहन दिबाना अछि।

कतेक पानियो सँ सस्त खून भेल गेलै
कतेक आँखि मे बमक जेना खजाना अछि।

कतेक लोक, लोक मे रहैछ, लोके सन
पड़ल जे असगरे लटल कते घराना अछि।

मरैत अछि से जीबि गेल, मरल जीवन सँ
अपन अपन जेबा सँ पूर्व सब भजाना अछि।

गीत

ज्योति-गीत

जगमग ज्योतिक वन्दन।
पूर्व क्षितिजमे स्वर्ण-शिखरसँ
किरणक निर्झर पावन।

ससरल दिशि-राधाक वदनसँ
तमकेर घन-अवगुंठन,
सृष्टिक मुरलीमे मुखरित अछि
नव चेतन अनुगुंजन।
ज्योति-विहग व्याकुल-मन-कलरव
तिमिरक कारा बन्धन,
फोलि कयल उन्मुक्त दिवाकर
खलखल गगनक आंगन।
जागल ताल, कमल-दल जागल
अलसायल पल सिहरन
धरणिक भाल भेल अछि जगमग
कर्मक लागल चानन।
गगनक पत्र, किरण केर मसि अछि
लीखल नव उद्बोधन,
विश्व-क्षितिज हित आइ हमर अछि
सह-अस्तित्वक चिंतन।
जय कर्मण्य, जागरण जय हे
जय-जय हे जाग्रत मन,
मंगल-कलश उठाओलि ऊषा
करबालय अभिनन्दन।
जगमग ज्योतिक वन्दन।

विदा-गीत

गीतक गाम उदासल ।
मनकेर चार उछाहल सन अछि
आँखिक धार पियासल ।

हुलकि हुलकि ओलती तकइत अछि
चिनमारक मुँह लटकल,
चौकठि एसगर गड़ल-गड़ल अछि
मन अछि उखड़ल-उखड़ल
उठल कहार चलल ड्योढ़ीसँ
टोलक कंठ झकासल ।
घंटी बौक सराय निहारय
फुलडाली विधुआयल

बाढ़नि देलक पटोटनि भोरे
आङनमे ओङ्घरायल
आँचर-आँचर कलश-कलश केर
प्यास रहत अजबारल ।
ड्योढ़ी ताकय दरबज्जा दिस
दरबज्जा मुँह झाँपय
आङन केर टाटक हिचुकी सुनि
हनुमानक ध्वज काँपय
सूप अगौं केर खरिहानेमे
बज्जर भेल, उपासल ।
मेहदी कानि, अकानि रहल छै
लगुजा पयरक पायल
अरिपन केर आङुरसँ तुलसी,
कहियो कहाँ अघायल,
एखनहि हाट पसारल सन छल
एखनहि गेल उसारल ।
बाकुट-बाकुट क्षण बिलहल अछि
कालक भरल चङेरा
सबदिन सँ सब घर कुचरल अछि
कौआ चढ़ल मुड़ेरा
हास गगन केर रौद इजोरिया
उगमायल अवसादल ।

●

गीत

अहाँ छी हमर महाजन।
आँखिक मुसुकानक गाहक हम
बदला मे ई जीवन।

राति हमर बन्हकी लागल अछि
दिन अछि हमर उधारी,
साँझ अपन हम बेचि रहल छी
भोरुक कोन पुछारी,
जै साँझक नहि भोर बनल अछि
ओहि रातुक छी चानन।
यौवन पड़ल हमर अछि भरना,
हम रैयत खतियानी,
दस्तावेज लिखल आँचर पर,
हम मोहरिल खनदानी,
लहना आर तगेदा थिकहे
एहि सम्बन्धक कारण।
कुरकी जपती सबटा भोगल
भोगल मनक निलामी,
दखल देहानिक डिगरी हाथहि
भेल करओ बदनामी,
यौवन केर चपरासी घुसहा,
माङ्य किदन कहाँदन।
बाटक सबटा मोड़ टपल छी
आगूमे चौबटिया,
साँझ पड़त कुन पंथ कहतके
उसरत पसरल हटिया,
फोलल जतेक बन्हायल ततबे
लागल तेहने बन्हन।
अहाँ छी हमर महाजन।

●

गीत

पुरिबा किदन कहाँदन सुनबय।
नीमक ठाढ़ि माति गेलि सुनि-सुनि
सिहरय, लजबय, बिहुँसय।

गगनक कुंज, रास अछि लागल
नखत-नखत अछि एखन हकारल
कहत मनक के निश्चय।
दिशि-राधा केर आँचर ससरल
देखि रहल घनश्याम पियासल
किरणक मुरली बजबय।
धरणिक पत्र ज्योति केर मसि अछि
नखतक आखर, दसखत शशि अछि
पतिया पुनि पुनि पठबय।
एसगरुआ केर वेदन केहनदन,
उजड़ल उपड़ल मन-वृन्दावन
दृग-यमुना जनु दरकय।
पुरुषे श्याम प्रकृति अछि राधा
दुहु अछि, दुहु हित आधा-आधा,
सृष्टिक क्रम अछि चलबय।
पुरिबा किदन कहाँदन सुनबय।

●

गीत

मन होइयँ अहाँकेँ टोकी आ कि नञि टोकी।

आँखिक जे छन्दमे अछि
अधरक कतेक भाषा
आँचरके रंगमे अछि
लाजक जेना परिभाषा

जे गीत बहि रहल अछि, रोकी, आ कि नञि रोकी।

ड्योढ़ीक बाँहिमे अछि
स्वागत जेना उताहुल
आङन के टाट भरिदिन
खड़िये जेना उचारल

जे रूप बहि रहल अछि रोकी, आ कि नञि रोकी।

बाटक जे मोड़ सब अछि
सबपर हकार साटल
यौवन के द्वार पर अछि
कालक कहार राखल

जे साँस बहि रहल अछि, रोकी, आ कि नञि रोकी।

साँझक करेज पर अछि
रातुक पहाड़ राखल
जीवन के छन्दमे अछि
गीतक पथार लागल

जे प्यास बहि रहल अछि, रोकी, आ कि नञि रोकी।

●

गीत

घनश्याम जेना अगुतायल अछि।
आङी हरियर पहीरि धरणि जनि
आँचरसँ उधिआयल अछि।

भीजल कदमक ठाढ़िक चुम्बन
हित पुरिबा ललचायल,
धरणि-नयन केर रंग जेना
नब कनिञा सन अलसायल
पहिल अषाढ़क पहिले अनुभव
सँ जनु डूभि डेरायल अछि।
दूबरि पातरि सरिता केर
तनमे, यौवन उमड़ल अछि
आइ अचानक मोन दुकूलक
कसकल अछि, मसकल अछि
श्यामक बरजोरीमे तट-राधा
केर, मन भसियायल अछि।
खतक आँचरमे शस्यक अछि
छन्द केहन इतिहासल
धरती केर जीवन-वंशीमे
रागक बाजल पायल,
बाधक मन जनु चासक गीतेसँ
एहिखन हरिआयल अछि।
खरिहानक मन उमगल देखल
आङन हुलसल, फुलसल
चूल्हाकेँ बिहुँसल देखल तँ
चिनमारो अछि चमकल,
आङन केर तुलसी एखनहि स
अरिपन हित ललचायल अछि।
घनश्याम जेना अगुतायल अछि।

●

परिशिष्ट

कविता

नवीन-वर्ष

पछिला वर्षक अन्हार केर केंचुआ कें छोड़ने
ट्रैफिक गाइड जकाँ हाथ उठौने
बुढ़बा इतिहास अपन कंपित आकाश नेने
नवीन वर्षक सिंहद्वार पर आबिकें
ठाढ़ भ' गेल अछि, निरीह भावें।
वर्ष भरिक सद्भावना-यात्राक
अनेक संधि-पत्रक अनेक लहास
अपना पीठ पर लादने, डाक-प्यून जकाँ आकाश
अपन अपन भूमि पर चलैत रहत वर्ष भरि।
इतिहास-देवता —
श्मशानमे बहैत बसात जकाँ उदास अछि,
पाँतरमे ठाढ़ एसगरुआ तारक गाछ जकाँ तटस्थ अछि,
मंदिर, मस्जिद आ गिरजाघरक गुम्बद जकाँ अवाक् अछि
(आ भविष्य) ?
भविष्य प्रेसक सतर्क मैनेजर जकाँ
पांडुलिपिक प्रतीक्षामे बैसल अछि।
(वर्त्तमानक पांडुलिपि)
नञि जानि, ओ पांडुलिपि
कॉमेडीक थिक अथवा ट्रैजेडीक ?

●

इतिहासक गली

फूटल घैलक खपटा जकाँ
हम अपन अतीतकेँ
इतिहासक गलीमे फेंकि आयल छी,
हमर वर्त्तमान
डस्टबीन मे फेंकल अयनाक छोट-छोट
टुकड़ी जकाँ
चमकि उठैत अछि,
जाहिमे देखबामे अबैत अछि
पाँच वर्षक लेल कटल हमर हाथ
सटकल हमर पेट
नग्न हमर देह
प्यासें तबधल हमर खेत
उदास तकैत चिमनी
बिनु माथक भीड़
अपर्स्यांत चौराहा,
सबटा डस्टबीनमे चमकि रहल अछि
(आ भविष्य ?)
भविष्य तँ ग्लेशियर जकाँ अदृश्य अछि,
ठोसो अछि, तरलो अछि, बहैत आबि रहल अछि।
फूटल घैलक खपटा जकाँ
हम अपन अतीतकेँ इतिहासक गलीमे
फेंकि आयल छी।

●

साम्राज्यवाद

विश्व-शांतिक द्रौपदी केर चीर
खिचने जा रहल अछि
आन्हरक संतान,
(दृश्य केर वीभत्सताक छैक ने किछु भान)
कौरवी-लिप्सा निरंतर आइ बढ़ले जा रहल
दिन-राति।
वृद्ध सभ आचार्य केर प्रज्ञा गेलनि हेराय,
मूक, नीरव, क्षुब्ध आ असहाय।
किन्तु
सागर मध्य उठले जा रहल भूकम्प,
जन-मनक पुनि 'कृष्ण' अप्पन
ताकि रहलै शंख।

●

मानवता

मूँह मे एखनहुँ पड़ल छै अधचिबाओल
हरित, कोमल आस्था केर [illegible],
कानमे एखनहुँ गुँजै छै तानसेनक गीत
किन्तु,
[illegible] देखि भीषण रथ
धनुष आ तीर
भयाकुल अछि हरिन-दल
संत्रस्त
द' रहल चकभाउर ठामहि ठाम।

●

मुखौटा

ओहि दिन अद्‌भुते भेलै
ओ बिना मुखौटेक सड़क पर चलि आयल छल
आश्चर्य !
ओकरा किओ चीन्हि नहि रहल छलै
मात्र मुखौटेकें चिन्हैत छलै लोक
मुखौटे ओकर वास्तविकता बनि गेल छलै
मुखौटेक हँसी असली हँसी छलै
मुखौटेक भंगिमा असली भंगिमा छलै
ओ घबड़ा गेल
परिचय पर परिचय देब' लागल
अवांछित बाढ़िक भसाठ जकाँ
भसिआइत चलि जाइत सड़क पर
लोकक आन्हर भीड़,
होटलक सामने, फुटपाथ पर

एँठकाँट केर लेल अटकल अनेक धधकल आँखि;
हॉस्पीटलक बराम्दा पर
नकली दबाइ सँ दम तोड़ैत असली मरीज,
एसेम्बलीक गेट पर
जीबक लेल खाइत गोली,
वकालतखानामे बिकाइत कानूनक
जिल्दहीन किताब,
ब्लाउजक पारदर्शी फीताकें नोचैत
पाछूक व्यस्त अनेक घिनौन दृष्टि,
अनेक अन्हारकें
अपन उजरा धोती-कुर्त्तामे नुकौने
धड़फड़ायल अगुतायल टाङ हाथ।
हम सबटा सही सही देखि सकैत छी
कहि सकैत छी,
विश्वास करू, हमरा चीन्हू।
मुदा लोक नठि गेल
चीन्हब अस्वीकार क' देलक,
लोक मात्र मुखौटा सँ परिचित छल।
ओ डरि गेल
आ भागल घर दिस
आ आबिकें पुनः मुखौटा चढ़ा लेलक
आ ताहि दिन सँ
बिनु मुखौटाक बहरायब छोड़ि देलक।

चिंता

अहाँ सड़क पर सँ भागि सकैत छी।
सड़क : जे एकटा 'कॉलगर्ल' जकाँ संग हेबाक
लेल प्रतीक्षामे रहैत अछि।
जे खंडिता अछि
मर्दिता अछि, चिरनवीना अछि,
कोलाहल जकर निरंतर शील-हरण
करैत रहैत अछि।
सड़क जे अनेक इतिहासक साक्षी अछि।
अहाँ कुक्कुरमाछी जकाँ लुधकल
सड़कपरक भीड़ सँ
अपन जान बचा कें
भागि आबि सकैत छी अपन घर।
मुदा
अपन अंतरक परिचित अपरिचित भीड़सँ
अखंड कोलाहल सँ
कोना बाँचि सकैत छी ?
कोना भागि सकैत छी ?
(वस्तुतः)
अहाँ सड़के जकाँ विवश छी
अहाँ मात्र सड़क छी
बिचारक यात्री चलि रहल अछि अविराम।

●

निष्ठा

देखैत छी एहि खत्ताक पानि कें ?
दिनोदिन सुखैले जा रहल अछि,
धोखासँ छूटल अछि
प्रवाहसँ टूटल अछि
एकटा छोटछिन खाधिमे
एकटा छोटछिन पानि,
पानि निरंतर सुखैले जा रहल अछि,
पानि डरि गेल अछि,
दुखी अछि
उदास अछि
आब ओ अपन तटक निरीह दूबिकें
नहि बचा सकत
नहि द' सकत कोनो सुख आब।
ओकर 'सुख' बहुत छोट अछि
जाहि लेल बहुत पैघ दुख उठा लेलक
देखैत छी एहि खत्ताक पानि ?
निश्चय सुखा जायत।

●

मूल्य

दूबर पातर छोटछिन इजोतक टुकड़ी
महाकाय महादानव अन्हारसँ लड़ैत लड़ैत
थाकि रहल अछि
अंग प्रत्यंग टूटि रहल छै
समर्थन लेल एम्हर ओम्हर तकैत अछि
तकैत अछि दूबर पातर छोटछिन
एसगर इजोतक एकटा टुकड़ी।
टुकड़ीक मोनमे निश्चयक एकटा विस्तृत आकाश अछि
ई लड़त,
अन्त धरि लड़त
एसगरो लड़त, लड़िते रहत
'अन्हार' के परास्त करत
निश्चय करत
दूबर-पातर
छोटछिन
इजोतक ई टुकड़ी।

मनुखदेवा

हम भरल छी एकटा खालीपनसँ
ओहि फोंकके खेतक मनुखदेबा जकाँ
वस्त्राभूषणसँ सज्जित क' सड़क पर ल' अनैत छी।
सड़क पर मनुखदेबाक भीड़
अपस्याँत दौड़ैत रहैत अछि
अंध, बधिर, बौक।
ने कियो ककरो देखि पबैत अछि
ने कियो ककरो चीन्हि पबैत अछि।
सड़क एकटा अनचिन्हार जंगल बनि जाइत अछि।
मनुखदेवा हिंसक भ' उठैत अछि।
सबटा इजोत गिड़ने चल जाइत रहैत अछि
आ' अन्हारक सिट्ठीसँ
बाटके घिनौने चल जाइत रहैत अछि।
हम एकटा मनुखदेवा
एकटा फोंक।

हमर पीढ़ी

कियो कहलक जे हमर पूर्वज जानवर छल
हम जानवरेक स्मृति-शष छी
परम्परा विशेष छी।
खोहस अट्टालिका धरि
छालसँ टेरेलिन धरि
अनेक भूगोलक अनेक इतिहास थिक।
वस्तुतः हम 'महान' जानवरक
अति 'क्षुद्र' संतान छी
ओकर हत्या, भूख लेल छल
हमर भूख, हत्याक लेल अछि
एही हत्याक लेल
जन्मल अछि विज्ञान।
असली विज्ञान
नकली हृदय आ नकली धड़कन बनबैत अछि,
असली कार्य लेल नकली मनुष्य बनबैत अछि।
नकली नहि बना सकल हथियार
नकली नहि बना सकल युद्ध।
असली विज्ञान असली आदमी
नहि बना सकल।
हम सब असली जानवरक
नकली संतान छी।

●

ईर्ष्या

अछि छोट वृत्त
चंचल, अमांगलिक, क्षणभंगुर
ईर्ष्याक एक मुट्ठी बसात
असमर्थताक किछु खड़पात
सब निराधार।
तैयो क्षण भरि लै
बिलमि जाउ
थुक थुका लियऽ
बढ़ि जाउ
प्रगति केर पंथ अपन उत्सुक पिपनीसँ तकइत अछि।

●

पैंघत्व

पैंघत्व नहि थिक पूस मासक रौद
नहि थिक
गुमसराइन भादवक सिहकी
ओ थिक क्रेन
जे उतरल इंजिनकें
पुनः पटरी पर चढ़ा दैछ।

●

आकांक्षा

गुमटीक घर जकाँ
हमर एकांत
थाकल अछि,
अभावक रौदमे झरकल अछि
ताड़क गाछ जकाँ
उचकि-उचकिकें ताकि रहल अछि
दूर-दूर धरि
एकटा छाहरि।
एकटा छोटछिन आकाश
आकाशक छोटछिन एकटा इन्द्रधनुष
इन्द्रधनुषक रंग
रंगक उत्साह,
उत्साहक एकटा छाहरि।
एखन मालगोदाम लग
गड़कल खलिया डिब्बा जकाँ
मोन उदास अछि,
टुकटुक तकैत अछि
कोनो ट्रेनक हलचल।

●

सान्निध्य

हकमैत दिन
रातुक एसगरुआ-पहाड़क आतंक सँ
भयाकुल संध्याक कोरामे नुका रहल
आउ गप्प करी
शब्दहीन, स्वरहीन
हमरा अहाँक बीचमे जतेक भाव अछि
सबटा अभावसँ जनमल अछि।
एकटा अभावक भाव
किन्तु ओहिमे भावक अभाव नहि अछि।
आउ हमरा सब ओहि भाव लेल
एकटा भाषा ताकी
जाहिसँ ओहिमे एकटा अर्थ भरि सका
एहि संध्याकें सार्थक बना सकी
सिहकैत बसातकें भोगि सकी।
डूबि सकी।
आउ गप्प करी।
शब्दहीन, स्वरहीन।

●

ताजा खबरि

पाँचम मंजिलसँ छप'बला अकबार
हमरा जनैत अछि, रगरग जनैत अछि
छपिते रहैत अछि
लिपिस्टिकक खबरि, महिला-वर्षक नाम पर
छपैत रहत हॉस्पीटलक थाकल झमारल
स्कर्ट केर खबरि, बलात्कारक खबरि,
अन्हार मोड़ परक खबरि, कोनो फूलन देवीक खबरि
उजरा इजोतमे पढ़ैत रहब करिया खबरि।
पाँचम मंजिलसँ छप'बला अकबारमे
उदास नीरसतामे ठाढ़ हमर गामक खबरि नहि रहैत अछि
नहि रहैत अछि बेमाय फाटल खेत
हकन्न खुरपी आ कोदारि
ठोर पर फुफरी पड़ल खरिहान
हाटक बाट तकैत चेथरा पहिरने होलमानी ध्वजा
अरिपनक पिठारक प्रतीक्षामे
वेनङ्ङन चार परक कौआ
खलिया लादि पर थुथून रगड़ैत सिलेबिया बड़द
पेटकान लधने कुकूर
कड़चीक अभावमे औनाइत टाटक पोरो-लत्ती
फाटल आङीक सियनि जर्का दरकल मुसुकान।
ई सब किछु नहि रहैत अछि
रहैत अछि फूलन देवीक खबरि
पाँचम मंजिलसँ छप'बला अकबार हमरा
जनैत अछि
रग-रग जनैत अछि।

●

कुमारि मुसुकान

आङनक कुमारि मुसकान
आब आङनमे नहि रहि सकैछ
जाय पड़तै आङनक पार
दोसर संसार।
बुढ़बा चौकठि टुकटुक तकैत अछि
थाकल अछि, चूर अछि
अनेक द्वार दौड़ल अछि
बेर बेर दौड़ल अछि
हतास अछि निराश अछि
हाथ पैर फेकैत अछि मोनकेँ मारैत अछि
कोना सजतै आङनक मुसुकान
कुमारि मुसुकान ?
बुढ़बा चौकठि केर फाटल छै बेमाय
ने रातिकेँ निन्न
ने दिनकेँ चैन
ताकै छै टुकटुक
थाकल आ चूर
आङनक कुमारि मुसुकान।

●

भय

दौड़ू दौड़ू, बजाउ, बचाउ।
दौड़ू, ऐ बाघ ! ऐ सिंह ! ऐ साँप ! ऐ भूत ! ऐ प्रेत
दौड़ू, बचाउ।
हे ओ देखू आदमी,
आदमी हमरा दिस तकैत अछि
हम आदमी सँ बहुत डरैत छी
दौड़ू।
बचाउ।

●

एसगर

डुबैत जा रहल अछि हमर 'आवाज'
एहि माथाहीन भीड़क असम्बद्ध कोलाहलमे
हमर 'आवाज' डूबल चल जा रहल अछि
असहाय
विवश
ओकर लहराइत हाथ एखनहु देखबामे आबि रहल अछि
सब ताकि रहल अछि
मूक, असमंजसमे।
कहियो जागत पौरुष (?)
ता कतेको डूबि गेल रहत।

●

नीति

कहैत अछि, पहिने एहो दने राजपथ छल
तें शिला-लेख गड़ल छलै
'संतोषं परमं धनम्'
'पर द्रव्येषु लोष्ठवत्'
'मातृवत परदारेषु'
'सत्यमेव जयते'
कहैत अछि पहिने एम्हर नीक नगर छलै
लोक पढ़ैत छलै
शिला-लेख गड़ल छल।
किन्तु नगर उजड़ि गेल, चलि गेल दोसर दिस।
राजपथ टूटि गेल
आवाजाही बन्द भेल
आब बियाबान अछि
जंगल, उजाड़ अछि
शिला-लेख पड़ल अछि
अक्षर पर धूरा अछि
निरर्थक पूरा अछि।

●

मिथिला : मैथिली

शून्य दृष्टिसँ मिथिला तकइछ देशक नव इतिहास।
कोशी आ कमलाक नोरमे भासल अछि विश्वास॥

बिलटि गेल अछि 'देसिल बयना' विद्यापति केर भाषा।
विस्फो-डीहक पाञ्चजन्य गढ़तै नवका परिभाषा॥

याज्ञवल्क्य, उदयन, मंडन आ लोरिक केर ई देश।
मैथिलीक अधिकार लेल अछि साजि रहल रण वेश॥

जनक जनपदक जागि रहल अछि विद्यापतिक भवानी।
मिथिला केर इतिहास नपुंसक केर इतिहास ने मानी॥

चट्टानी ई चरण उठल, मानत नहि धधकल धधरा।
मिथिला मैथिल मैथिलीक अछि बीति गेल अधपहरा॥

हमर रोष छल रुद्ध, क्रुद्ध अछि चारि कोटि केर वाणी।
काल बनत विकराल, उठि रहल मैथिलीक सेनानी॥

मिथिला फूकत शंख, धैर्य केर डोलि रहल अछि आसन।
अधिकारक भूखल गर्जन लग बाँचत नहिं सिंहासन॥

माङल नहिं, छीनल जाइत अछि इतिहासक अधिकार।
चारि कोटि मिथिलाक कंठमे अछि भैरव-हुँकार॥

अन्हड़, बज्र, बिहाड़ि, पौरुषक लेल करैछ परीक्षा।
अधिकारक उत्तराधिकारी नहि मङैत अछि भिक्षा॥

●

प्रो० मायानन्द मिश्र

जन्म : १७-८-१९३४ ई० ।
जन्म स्थान : बननिया (सहरसा)
पता : विद्यापतिनगर, सहरसा-८५२२०१

प्रकाशित कृति :

भाङक लोटा	(कथा-संग्रह, १९५१)
आगि मोम आ पाथर	(कथा-संग्रह, १९६१)
चन्द्रबिन्दु	(कथा-संग्रह, १९८३)
बिहाड़ि पात पाथर	(उपन्यास, १९६०)
मंत्रपुत्र	(उपन्यास, १९८६)
खोंता आ चिड़े	(उपन्यास, १९८८)
दिशान्तर	(कबिता, १९६५)

प्रमुख अप्रकाशित कृति :

माटिक लोक	(उपन्यास)
एके बापक बेटा	(रेडियो नाटक)
ठकनी	(उपन्यास)
प्रथमं शैल पुत्री च	(इतिहासाख्यान)
पुरोहित	(उपन्यास)
शतरशेष	(कथा-संग्रह)